www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-8* *August 2025***

मुगल काल में सांस्कृतिक सामंजस्य का एक संक्षिप्त अवलोकन 1556 ई० से 1707 ई० तक

अम्बर कुमार

शोध छात्र, इतिहास विभाग, पाटलिपुत्रा विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. प्रशांत कुमार

शोध प्रयवेक्षक, सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, टी० पी० स० कॉलेज, पटना

सारांश

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति में से एक है । जो की विभिन क्षेत्रों में अलग –अलग रूप से प्राचीन कल से विघमान है । कई राजवंशो ने यहाँ शासन किया किन्तु भारत की संस्कृति ने अपना वजूद को नहीं खोया बल्कि विभिन्न संस्कृति को अपने में समाहित कर लिया । बुद्ध,जैन हो या इस्लाम ,मध्य काल में मुगल जैसे शक्तिशाली शासक व उनकी धार्मिक कट्टरता की निति तथा इस्लाम धर्म के वजूद को भी अपने में समाहित कर लिया और उसका भी भारतीयकरण किया फिर और इंडो इस्लामिक शैली जिसे गंगा जमानी तहजीब कहा गया का विकाश हुआ ।

मुख्य शब्द– संस्कृति, मुगल, धर्म,वास्तुकला ,शिक्षा ,महिला ।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत का प्रारंभ हजारों वर्ष पहले हुआ। देखा जाए तो भारत की संस्कृति का सबसे अधिक प्राचीनतम स्वरूप हमें सिंधु संस्कृति में मिलती हैं जिसमे परिवार, समाज, राजा, लोक इच्छा तथा पर्यावरणीय संतुलन के साक्ष्य मिलते हैं, वहीं सिंधु संस्कृति के बाद वैदिक संस्कृति की चर्चा करना अत्यंत आवश्यक है जिनमें ग्रामीण व्यवहार, पशु–पालन, पशु–चारण, सामूहिकता, पेशा तथा धर्म को अधिक महत्व देने के साक्ष्य मिलते है। वैदिक काल से लेकर दसवीं सदी तक या कह दें कि रामायण काल और महाभारत काल से लेकर अठारहवीं सदी तक भारतीय संस्कृति का विकास क्रम रूका नहीं है तथा एक न एक नयी विचारधारा जुड़ती ही गई है जो भारतीय संस्कृति को महान तथा व्यवाहारिक बनाने में ही सहायक रही है। मुगल काल का आंरभ 16वीं सदी में भारत में होता है, तथा विशेष रूप से इसकी चर्चा सर्वमान्य रूप से 1556 ई– से की जाती है, जब अकबर को सिंहासन पर बैरम खां के द्वारा बैठाया गया था। सही तौर पर अकबर के राजा बनने के बाद भारतीय संस्कृति तथा मुगल संस्कृति के बीच के संबंध को एक आधार मिलना आरंभ होता दिखता है। कई इतिहासकार कहते है कि अकबर का जो मूल नाम जलालुद्दीन था, वह अरबी पद्धति से रखा गया नाम था परंतु 'अकबर' नाम भारतीय संस्कृति में एक कुशल शासक तथा महान समन्वयक के नाते रखा गया। देखा जाए तो अकबर के नाम का अर्थ ही महान था।[1] सही तौर पर अकबर के काल में भारतीय संस्कृति की स्वीकार्यता विदेशियों के सामने इसलिए हुई कि अकबर भारतीय संस्कृति को जानने में गहरी दिलचस्पी रखता था। देखा जाए तो अकबर की परिपक्वता, बुद्धिमता तथा कला , वास्तुकला और भारतीय संगीत, साहित्य के प्रति गहरी दिलचस्पी थी जो मुगल संस्कृति तथा भारतीय संस्कृति के बीच सामंजस्य की स्थिति उत्पन्न की तथा उसका प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा जो तत्कालीन रूप से एक परिपक्व समाज कहलाता था। देखा जाए तो

तत्कालीन स्वरूप में संस्कृतियों के सामंज्स्य का समाज पर

प्रभाव के तीन चरण हैं–

1. अकबर के काल का चरण
2. जहांगीर के काल का चरण
3. शाहजहां और औरंगजेब के काल का चरण

सही तौर पर अकबर के शासन काल में अपेक्षाकृत सबसे अधिक सामंज्स्य की स्थिति देखने को मिलती है, इसके पीछे के मुख रूप से तीन कारण थे–

क. अकबर के काल में मुगल कला और संस्कृति का भारतीय परिप्रेक्ष्य विकास।

ख. अकबर के काल में सनातन धर्म की आदरणीय स्थिति का तटस्थाता से समीक्षा।

ग. अकबर कालीन नीतियों तथा धर्म का समाज पर प्रभाव।[2]

तत्कालीन संस्कृति तथा इसके समन्वय का प्रभाव भारतीय समाज पर निम्न रूप से पड़ा।

1. कला एवम् संस्कृति के आकार में 'इण्डो–इस्लामिक' शैली का विकास जिससे एक नयी तहजीब का विकास जो भारतीय समाज की विशेषताओं को निखारा।
2. अकबर के काल में शासन पद्धति का ऐसा विकास जो मोटे तौर पर हिन्दू समाज तथा पूर्ण रूप से भारतीय समाज को बड़े स्तर पर क्षति नहीं पहुँचाया।[3]

शोध स्रोत–

एक शोध अध्ययन के रूप में भारतीय संस्कृति तथा मुगल संस्कृति के बारे में जो भी अध्ययन मेरे द्वारा किया गया है वह विभिन्न ऐतिहासिक उपागमों पर आधारित है तथा इसके अलावा व्यक्तिगत जानकारी, अभिलेख तथा विभिन्न इतिहासकारों के लेखन को दर्शाया गया है। अकबर के शासन काल से लेकर शाहजहां के शासनकाल तक मुगल सत्ता ने जिस व्यवहार को अपनाया तथा जिस परिस्थितियों को अपनाया वह संकीर्ण नहीं था। इन शासकों के शासन काल में ऐसी नीति अपनायी गयी जिनसे भारतीय समाज में हिन्दू, मुस्लिम एकता का आधार तैयार हुआ तथा सही रूप में एक ऐसी संस्कृति का जन्म हुआ जिनमें न किसी का निरादर था और न ही किसी की संस्कृति को बर्बाद करने के लिए कोई साजिश। देखा जाए तो मुगल संस्कृति के विकास के बाद ही भारतीय संस्कृति में एक नये शब्द का जन्म हुआ जिसे

''गंगा–जमुनी तहजीब'' कहा गया।

काल क्रमानुसार अकबर से लेकर औरंगजेब के काल तक मुगल साम्राज्य में कई ऐसे मानवीय गतिविधियों का पता चलता है, जिनसे कला, संस्कृति, धर्म, साहित्य, शिक्षा तथा वास्तुकला के खोज का भारतीय समाज पर प्रभाव पड़ता है। औरंगजेब के काल में हुई कुछ घटनाएं तथा इसके नकारात्मक प्रभाव जो तत्कालीन समाज पर पर पड़ा वह भी भारतीय समाज के उस महान चरित्र को प्रेषित करता है जो उसका विशेष गुण दर्शाता है जैसेः– किसी भी परिस्थिति में कोई भी अच्छी कला तथा संस्कृति को अपने अंदर समेट लेना।[4]

इस काल में भारतीय परिदृश्य में नई भाषा का आगाज या प्रवेश कह लें हुआ जिसमें मिश्रण की स्थिति देखी जा सकती है। जैसेः– अरबी, फारसी तथा उर्दू के साथ ही संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाएँ जैसेः– पंजाबी, कश्मीरी तथा सिंधी और बंगाली का सम्मिश्रण। ऐसे तो कई स्तर पर दिल्ली सल्तनत के काल में ही भारतीय भाषाओं के साथ तुर्की और अरबी भाषाा की तुलना की जाने लगी थी। परंतु मुगल काल में भाषाओं के बीच भाषा तथा संतुलन की स्थति अधिक स्थापित हुई।[5]

मुगल काल में भारतीय ग्रंथों तथा धार्मिक पुस्तकों के साथ कई प्राचीन ग्रंथों का फारसी और अरबी में अनुवाद होने लगा तथा भारतीय धर्म, संस्कृति तथा समाज का परिचय अरबी तथा तुर्की के साथ पूरे इस्लामिक संस्कृ ति में होने लगा। इससे एक प्रकार के संचार का आरंभ हुआ जो दोनों संस्कृति के मिश्रण से भारतीय समाज पर एक नया प्रभाव डाला। उदाहरण के लिए दाराशिकोह जो मुगल बादशाह शाहजहाँ का सबसे बड़ा पुत्र था, उसके व्यक्तिव को महान माना गया है, दारा शिकोह ने जो कार्य किया तथा जो अध्ययन कर उसकी रचना की उसका प्रभाव भारतीय समाज पर सबसे अधिक पड़ा।

इतिहासकारों के अनुसार दारा शिकोह का एक महान ध्येय था कि भारतीय का समाज विश्व का एक अनोखा समाज बने तथा इस कारण सबसे जरूरी है कि यहां के हिन्दू, मुस्लिम के बीच आपसी विश्वास कायम हो। दारा ने अपने जीवन काल में वेदांतिक और इस्लामिक पद्धति को एक करने के लिए कई प्रकार की कोशिशे की। 52 उपनिषदों का अनुवाद उसने सिर–ए–अकबर में किया।[6]

देखा जाए तो अकबर के काल में कई ऐसी नीतियों को रेखांकित किया गया जो भारतीय समाज में मुगल संस्कृति के प्रति विश्वास की भावना का जन्म हुआ। अकबर के दरबार में हिन्दुओं को कई आवश्यक और बड़े पद पर देखा गया तथा कई बार महत्वपूर्ण समय में उनसे सत्याह भी लिए गए। देखा जाए अकबर के काल में कई ऐसी नीतियों को रेखांकित किया गया जो भारतीय समाज में मुगल संस्कृति के प्रति विश्वास की भावना का जन्म हुआ। अकबर के दरबार में बिन्दुओं को कई आवश्यक और बड़े पद पर देखा गया तथा कई बार महत्वपूर्ण समय में उनसे सत्याह भी लिए गए। देखा जाए तो टोडरमल, अकबर के मुख्य सलाहकार बिखल, मानसिंह तथा जगन्नाथ पंडित इत्यादि ने भारतीय संस्कृति के महान अवयव को अकबर के सामने प्रदर्शित किया जिससे अकबर के शासन का ऐसी समन्वयकारी संस्कृति वाली नीति बनाने को अवसर मिला होगा। देखा जाए तो मुगल सत्ता के परिपक्व होने तक भारतीय सामाजिक पद्धति में एक नया बदलाव देखने को मिला जो पहली बार तो नहीं देखा जाने वाल कहा जा सकता है परंतु कई स्तर पर नया अवश्प कहा जा सकता है।

देखा जाए तो तत्कालीन स्थिति में जाति व्यवस्था के अंदर ही नयी जातियों तथा उप–जातियों का विकास तो देखा ही गया, साथ में ही राजा, सम्राट और जनता के बीच एक नया वर्ग भी बना जो उलेमा, सैययद, शेख इत्यादि आए।[7]

इस वर्ग के अलावा एक और सामाजिक वर्ग की रचना हुई जिसमें कई महत्वपूर्ण तथा धनी व्यक्तियों का समूह आया। जैसे– मुस्लिम अमीर, अधीनस्थ राज्यों के शासक, जमींदार जागीरदार आदि।

उपरोक्त वर्ग के विकास से भारतीय समाज में एक नया मध्यम वर्ग बना

जिसमें निम्न प्रकार के समूह आए–

''हकीम, ज्योतिष, कवि, व्यापारी, चौकीदार, चौधरी आदि''

उपरोक्त मध्यम वर्ग के बाद एक निम्न वर्ग का भी उदय हुआ जिसमें प्रमुख थेः–

कृषक, भूमिहीन, दरिद्र, दास, निर्जन इत्यादि।

भारतीय समाज का सबसे बड़ा वर्ग जो हिन्दु समाज रहा है, वह मुगल काल में अपने पूर्व–चरित्र में ही स्थित था। हिन्दू समाज जातियों और उप–जातियों में विभाजित था। समाज में ब्राह्मणों का स्थान सबसे ऊपर था। देखा जाए तो ब्राह्यणो का स्थान सबसे अधिक अनुदान, उपहार तथा राजा का आश्रय प्राप्त होता था। ब्राह्यण के बाद क्षत्रिय का वर्ग था। क्षत्रिय वर्ग का तत्कालीन शासन तथा प्रशासन में प्रमुख स्थान था। क्षत्रियों का स्थान उनकी योग्यता का परिपक्व था। इस वर्ग के बाद वैश्य वर्ग का स्थान था। तथा इस समुदाय में इनकी स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण थी। व्यापार, निवेश तेज पैसे के लेन–देन में व्यापारियों के वर्ग का विशेष स्थान रहा। चौथे वर्ग में निम्न स्तर के लोगों को रखा गया जिसमें पेशेवर समूह भी सम्मिलित थे। देखा गया कि मुगल शासकों के द्वारा समाज, वर्ग तथा आंतरिक सामाजिक परंपरा में कोई विशेष दखल नहीं दिया गया परंतु महिलाओं में पर्दा प्रथा की अधिकता मुगल–काल से पहले भारतीय समाज में पर्दा प्रथा नहीं थी। बल्कि यह कह सकते है कि मुगल काल में इसमें व्यापकता देखने को मिली। पहले भी महिलाएँ दो विवाह नहीं कर सकती थीं तथा मुगल काल में भी यही कायम रहा। इसके अलावा महिलाओं को पैतृक संपत्ति में भी हिस्सा नहीं मिल सकता था।[8]

भारतीय समाज पर मुगल संस्कृति का सबसे अधिक प्रभाव जीवन जीने के तरीकों पर पड़ा। देखा जाए तो मुगल काल में एक तरफ शासक वर्ग शान से जीवन व्यतीत करते थे वहीं किसान, दस्तकार, श्रमिक अत्यंत गरीबी से अपना जीवन–यापन करते थे। देखा जाए तो शासक तथा धनी वर्ग की संपन्न स्थिति का पूरा श्रेय मजदूरों तथा किसानों का था जिनके घर में अभाव ही अभाव था।

भारतीय संस्कृति एवम् मुगल संस्कृति के बीच आपसी समन्वय को सबसे अधिक तत्कालीन स्थापत्य कला, साहित्य तथा संगीत में देखने को मिलता है। मुगल काल को भारतीय परिप्रेक्ष्य में सबसे अधिक महत्व इन्हीं के कारण दिया जा सकता है। मुगल साम्राज्य में शासन के साथ कुछ ऐसे क्षेत्र का विकास हुआ जो भारतीय संस्कृ ति के साथ सहिष्णु रूप से जूड़ गया।

उदाहरण के लिए देखा जाए तो मुगल अपने साथ तुर्क–ईरान संस्कृति को स्थापत्य के विकास के तौर पर देखा जा सकता है। स्थापत्य कला के विकास में भारतीय शैली तथा मुगल शैली के बेजोर मिश्रण को देखा जा सकता है। मुगल शासकों ने कई स्तर पर विभिन्न भवनों, दरवाजों, मस्जिदों तथा बावालियों का निर्माण कराया। इसके अलावा कई कीले भी बनाए जो भारतीय एवम् मुगल शैली के मिश्रण को बेजोर उदाहरण है तथा अधिकता लाल बलुआ परंपरा से बने है।

तत्कालीन स्थापत्य कला के विकास में तुर्क ईरानी संस्कृति के साक्ष्य के साथ भारतीय पारंपरिक पद्धति को भी संयोजित किया हुआ मिलता है। देखा जाए तो कई किले तो पूर्ण रूप से भारतीय शैली तथा मुगल शैली के मिश्रण को रेखांकित करता है। इन महलों में भारतीय स्थानीय सामाजिक पद्धति को चिन्हित किया जा सकता है। महलों में गुजराती, बंगाली, कश्मीरी शिल्पकला के मिश्रण को देखा जा सकता है। महलों में सुदंर छत्रियों के साथ दीवारों की सजावट में मध्य एशियाई प्रभाव तो देखने को मिलता ही है। इनके साथ कई ईमारतों में सफेद तथा लाल बालू पत्थरों का भी प्रयोग मिलता है। मुगलों के द्वारा महलों के साथ स्रोतों तथा बगीचों का भी निरूपण किया गया था। तथा इनके चारों ओर जलीय विभाजन की सजावट बगीचे के साथ दिखाई दे सकता है। देखा जाए तो यह एक प्रकार की भारतीय प्राचीन शैली थी जो युगों से भारतीय सामाजिक वर्ग के द्वारा भवनों के आस–पास निर्मित किया जाता था। भारत में प्रवेश कराया तथा इनका भारतीय परंपराओं के साथ मिश्रणा हो गया।[9]

देखा जाए तो संस्कृति समन्वय का सबसे महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव तत्कालीन चित्रकारी के क्षेत्र में भी मुगलों के काल में भारतीय संस्कृति की प्रश्रय मिला जिनसे भारतीय समाज में एक नया परिवर्तन देखने को मिला। देखा जाए तो मुगलों के काल में चित्रकारी निर्माण में भारतीय जीवन से जुड़े समावेशित किया गया तथा इसके साथ भारतीय महान ग्रंथों जैसे महाभारत, पंचतंत्र तथा अन्य कई प्रसंगों को चित्र में स्थान दिया गया।ख्10,

जहांगीर के काल में चित्रकारी की स्थिति अधिक विकसित हुई तथा मनुष्य की कल्पना के साथ पशुओं की आकृति का भी इस काल में चित्रंकन होने लगा।[10]

औरंगजेब के काल में चित्रकारों पर शोषण की तलवारें लटकी तथा इसका नकारात्मक प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा। विभिन्न चित्रकारों ने अपनो स्थान बदल लिया तथा वे कई छोटे–छोटे शहरों में चले गए तथा इसके अलावा कई छोटे प्रांतों में बस गए। इन कारणों से भारतीय समाज में चित्रकारी अब एक आम–कला के रूप में विकसित होने लगा तथा कई शैलियों का विकास भी हुआ।[11]

साहित्य के विकास में भी मुगल काल की विशेषताओं को हम सामाजिक सामंजस्य से जोड़ सकते है। मुगलों के काल में भारतीय सामाजिक पद्धति मुगल समाज की संस्कृति से पूर्ण रूप से जुडी। इसके कई कारण थे।

देखा जाए तो मुगल शासकों के द्वारा कई साहित्यकारों को अपने दरबार में संरक्षण देने की पुष्टि होती है। इसके अलावा राजवंश के भी सदस्य पढ़े लिखे होने के कारण साहित्य में कपि रखते थे।

भारतीय प्राचीन ग्रंथों को मुगल काल में तुर्की और फारसी में अनुवाद कर सामाजिक सामंजस्य को बढ़ाया गया। उदाहरण स्वरूप जहां बदायुनी ने महाभारत का अनुवाद रज्मनामा के तौर पर किया वहीं उस काल में तुलसीदास, सुरदास तथा मीराबाई ने भक्ति–धारा के लेखन को गति काल विकास इण्डो इस्लामिक सामाजिक समरसता को ओर गाढ़ा करता हुआ दिखता है।[12]

देखा जाए तो अकबर ने अपने सामाजिक संबंध हिन्दुओं के परिवार से बनाए तथा इसका प्रभाव राज–दरबार के रहन–सहन पर भी पड़ा होगा। जोधा–बाई के द्वारा हिन्दू –रीति रिवाजो को अपनाने तथा उसे दरबार में अपने स्तर से लागू करने की परंपरा ने सामाजिक सांस्कृतिक सामंज्स्य का एक मजबूत उदाहरण हो सकता है।

देखा जाए तो अकबर ने अपनी सूलह–ए–कूल की नीति के धार्मिक सद्भावना को सबसे प्रमुख स्थान दिया है। निराकार परमात्मा तथा प्रेम से ही ईश्वर की प्राप्ति का संदर्भ भारतीय सामाजिक पद्धति के एकदम नजदीक है।[13]

धार्मिक स्थिति की व्याख्या में यह कहना आवश्यक होगा कि अकबर ने दास प्रथा और जजिया कर को समाप्त करने के साथ तीर्थ–यात्र कर को भी खत्म कर भारतीय हिन्दुओं के बीच एक नया संदेश दिया होगा। जिससे दोनों समाज के बीच दूरी कम हुई होगी।

औरंगजेब के काल में कई उलट–फेर देखने को मिलता है। दारा–शिकोह की हत्या तथा कई मंदिरों का

विनाश सामाजिक सामंजस्य में कमी लाने की कोशिश के रूप में देखा जा सकता था। परंतु इसका अधिक प्रभाव सामाजिक एकता पर नहीं पड़ा तथा एक साथ रहने, खाने, पीने और खुशियाँ मनाने की परंपरा चलती रही।ख13,

निष्कर्ष– सही तौर पर मुगल काल की विशालता तत्कालीन संस्कृति को एक नया रूप प्रदान करता है। मुगल शासकों ने भारत में अरबी तथा मध्य एशियाई संस्कृति को पार कराया तथा यहाँ की संस्कृति की महानता को हस्तक्षेपित भी नहीं किया देखा जाए तो यह कहना गलत नहीं होगा कि मुगल संस्कृति को भारतीय संस्कृ ति ने स्वीकारा तथा उसके प्रवेश को धैर्य के साथ अपनाया। इसका प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा। भारतीय समाज में धैर्य, नई चीजों को ग्रहण करने की प्रवृत्ति, रहन–सहन में नये तत्वों को समेटने की कला तथा निर्माण कला में नयी चीजों को अपनाने की क्षमता का विकास हुआ।

मुगल काल की संस्कृति ने भारतीय संस्कृति की महान परंपरा को पहचान उसे संबल देने की भरपूर कोशिश की। इसके साक्ष्य के रूप में तत्कालीन भवन, चित्र, बगीचे, शासन दस्तावेज भूमि पैमाईश, हाट, बाजार आदि है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ सूचि ग्रन्थ–

1. हबीब, इरफान. मध्यकालीन भारत की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ. न०–33–34.
2. वही पृष्ठ. न०–37–38.
3. शहाब सरमदी मुग़ल भारत में भारतीय संगीत, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ. न०–131–133
4. वही पृष्ठ. न०–140–141
5. लुईस रोवेल –प्राचीन भारत में संगीत एवं संगीत चिंतन यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस (हिंदी अनुवाद संस्करण उपलब्ध),1992, पृष्ठ. न०–150–151.
6. एब्बा कोच (Ebba Koch) मुग़ल स्थापत्य का इतिहास (Mughal Architecture: An Outline of Its History) एब्बा कोच (Ebba Koch), स्थापत्य की ऐतिहासिक विकास यात्रा Primus Books 1991 (पृष्ठ. न०–89–90)
7. वही पृष्ठ. न०–116–117.
8. कैथरीन बी. ऐशर ,भारत की मुग़ल वास्तुकला (Architecture of Mughal India)1992 संपूर्ण मुग़ल काल की वास्तुकला पर आधारित पृष्ठ. न० 203–206
9. मनोरमा शर्मा–मुग़ल भारत में संगीत और नृत्य संदीप प्रकाशन,वर्ष, 2004 (पृष्ठ. न०–158,159,)
10. वही पृष्ठ. न०–178–179
11. Satish Chandra &Medieval India: From Sultanate to the Mughals Vol- 2: Mughal Empire, 1526–1748)– वर्षः 2007, पृष्ठ. न०–68–69
12. ए० एल० श्रीवास्तव–अकबर एण्ड नेशनल इन्टिग्रेशन, जर्नल आफ इण्डियन हिस्ट्री1962, पृष्ठ. न०–40.
13. के. एन. श्रीवास्तव–मुगलकालीन भारत में समाज और शिक्षा, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, 2010।

(पृष्ठ. न०–50–53)

Cite this Article-

'अम्बर कुमार, डॉ. प्रशांत कुमार ', "मुगल काल में सांस्कृतिक सामंजस्य का एक संक्षिप्त अवलोकन 1556 ई० से 1707 ई० तक', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:08, August 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i800014

Published Date- 10 August 2025